By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

B.A. History (H)
Deg - II
Paper - III (B)

तुगलक साम्राज्य के पतन के लिए फिरोज तुगलक कहाँ तक उत्तरदायी था?
(How far Firoz Tughlak was responsible for the downfall of Tughlak empire?)

वास्तव में तुगलक वंश का पतन मोहम्मद तुगलक के समय ही आरम्भ हो गया था। फिरोज भी पतन की ओर अग्रसर साम्राज्य को छिन्न-भिन्न होने से न रोक सका, बल्कि इसी के समय साम्राज्य की समाधि तैयार हो गयी और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गयी।

तुगलक साम्राज्य के पतन के कारण

*1. साम्राज्य की विशालता :- तुगलक साम्राज्य विशालता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। आवागमन की असुविधा के कारण सम्पूर्ण साम्राज्य सुचारु रूप से नहीं चल पाता था। विशेषकर दक्षिण भारत पर दिल्ली से नियंत्रण रखना मुश्किल हो गया था। प्रायः सुल्तान का दक्षिण चला जाना उत्तर के लिए घातक सिद्ध हो गया था क्योंकि जब सुल्तान दिल्ली में रहता था तब दक्षिण में अशांति फैल जाती थी।

*2. प्रांतपतियों एवं सेनापतियों की स्वार्थपरता :- प्रांतपतियों एवं सेनापतियों साधारणतया अवसर पाते ही विद्रोह कर देते थे।

*3. निश्चित उत्तराधिकार के नियम का अभाव :- दिल्ली सल्तनत के राजवंशों में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम नहीं था। अतः प्रायः प्रत्येक सुल्तान को अपने शासन के आरम्भ में षडयंत्रों, कुचक्रों, विद्रोहों तथा प्रतिद्वन्द्विता का सामना करना पड़ता था। इससे दरबार में दलबन्दियों को प्रोत्साहन मिलता था और प्रत्येक दल दुर्बल राजकुमार को ही सिंहासन पर बैठाकर उन्हें कठपुतली की भाँति नचाता था।

* 4. साम्राज्य में संगठन का अभाव :- साम्राज्य को सुदृढ़ तथा सुसंगठित इकाई बनाने का प्रयास कभी नहीं किया गया जिसमें विघटनकारी प्रवृत्तियाँ सदैव क्रियाशील रहती थी।

* 5. शासन में विदेशीपन :- साम्राज्य का संचालन तुर्क तथा विदेशी अमीरों द्वारा होता था जिनको भारतीयों की आशा अभिलाषा तथा आकांक्षाओं के साथ कोई सहानुभूति न थी।

* 6. रिक्त राजकोष :- किसी भी साम्राज्य को सुदृढ़ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए धन की आवश्यकता होती है। तुगलक वंश में लगातार युद्ध के कारण राजकोष खाली हो गया था जिससे इसका पतन अवश्यम्भावी था।

* 7. फिरोज की दुर्बलतायें :- फिरोजशाह तुगलक चौदहवीं शताब्दि में सुल्तान बनने की सर्वथा अयोग्य था। इस समय किसी कठोर शासक एवं दृढ़ व्यक्ति की आवश्यकता थी फिरोज की उदारता का लोगों ने दुरुपयोग किया। सरकारी कर्मचारी एवं सैनिक बेदचलन तथा घूसखोर हो गये थे। फिरोज धर्मान्ध था। वह मुसलमानों का पक्ष बँद आँखों से करता था। उससे हिन्दुओं में असंतोष फैल गया जिसका फल आगे चलकर अच्छा नहीं हुआ।

* 8. वृद्धावस्था में फिरोज का गद्दी पर बैठना :- तुगलक वंश के विनाश का एक प्रमुख कारण फिरोज का वृद्धावस्था में गद्दी पर बैठना था। वृद्धावस्था के कारण उसमें उत्साह की कमी थी।

*9. दास प्रथा:- फिरोज के शासनकाल में दासों की संख्या लगभग दो लाख थी और वे एक प्रकार के राज्य के लिए भार हो गये थे। इनमें राजभक्ति का सर्वथा अभाव था और वे कुछ न कुछ षडयंत्र रचा करते थे।

*10. जागीर प्रथा:- फिरोज द्वारा चलायी जागीर प्रथा का भी साम्राज्य पर बहुत बुरा असर पड़ा। ये जागीरदार धीरे-धीरे अपनी शक्ति बढ़ाने लगे और इनकी राजभक्ति भी शिथिल पड़ने लगी और अवसर पाकर उन्होंने विद्रोह का झंडा खड़ा कर अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

*11. सेना मे वंशानुगत पद:- फिरोजशाह के समय में योग्यता एवं रणकुशलता नष्ट हो गयी। जब कोई सैनिक वृद्ध हो जाता था तो उसके स्थान पर उसका पुत्र या कोई निकट संबंधी भर्ती कर लिया जाता था। सेना के निर्बल हो जाने से तुगलक साम्राज्य का स्थायित्व असंभव हो गया।

*12. धर्म प्रभावित राज्य:- फिरोज राजनीति को धर्म से अलग न कर सका। उसके धार्मिक पक्षपात का प्रभाव भी राज्य पर बहुत खराब पड़ा और इससे हिन्दुओं मे असंतोष फैल गया।

*13. फिरोज की दुर्बल परराष्ट्र नीति:- फिरोज की अस्थिर एवं दुर्बल परराष्ट्र नीति का साम्राज्य की सुरक्षा तथा सुदृढ़ता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

*14. मुसलमानों का नैतिक पतन:- आमोद-प्रमोद का जीवन व्यतीत करने के कारण मुसलमानों का नैतिक पतन चुका था। अब उनमे पूर्वजों जैसा पौरुष एवं साहस नही रह गया था।

* 15. मुसलमानों में एकता का अभाव :- तुर्की अमीर, मंगोल तथा अफगान लोगों में आपसी वैमनस्य था जिससे साम्राज्य की नींव दुर्बल हो गयी।

*16. हिन्दुओं का विद्रोह :- हिन्दू अपनी पुरानी प्रतिष्ठा एवं गौरव को नहीं भूले थे और जब भी मौका मिलता था वे विद्रोह का झंडा खड़ा कर देते थे।

*17. फिरोज के अयोग्य उत्तराधिकारी :- फिरोज के बाद जितने सुल्तान दिल्ली के सिंहासन पर बैठे वे इतने योग्य न थे कि इतने बड़े साम्राज्य को चला सकें।

* 18. तैमूर का आक्रमण :- तुगलक साम्राज्य पर तैमूर का आक्रमण का बहुत बड़ा आघात पहुँचा।

*19. अंतर्जातीय विवाह :- लेनपुल के अनुसार मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ जो अंतर्जातीय विवाह करना आरम्भ किया उसका भी साम्राज्य के स्थायित्व पर बुरा प्रभाव पड़ा।

लेकिन तुगलक साम्राज्य के पतन का श्रेय केवल फिरोज को ही देना उचित नहीं जान पड़ता है क्योंकि मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की विफलता भी तुगलक साम्राज्य की पतन के लिए जिम्मेदार थी। इन योजनाओं की विफलता से चारों ओर असंतोष की आग भड़कने लगी और विद्रोह होने लगी। साथ ही मोहम्मद तुगलक की दण्डनीति से उसके शत्रुओं की संख्या अधिक होगयी। इस तरह फिरोज ने ही तुगलक साम्राज्य को पतनोन्मुख किया।